दीन - ईमान

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 28. 04. 1988.

गुरू तेग बहादुर सिखों के नवें गुरू थे । उन दिनों भारत में मुगलों का राज्य था और औरंगजेब भारत की राजगद्दी पर विराजमान था । औरंगजेब कट्टर मुस्लिम धर्म का समर्थक था तथा सारे भारतीयों को वह मुसलमान देखना चाहता था । इसलिए उसने जगह-जगह पर अपनी फौज व धर्म प्रचारक भेज रखे थे । जो भारतीय व्यक्ति अपना धर्म बदल लेता था उसको इनाम दिया जाता था और इज्जत भी । बहुत से लोगों ने लालच में आकर मुसलमान बन कर रहना स्वीकार कर लिया ।

श्रीनगर में हमेशा से बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म का बोलबाला रहा है । औरंगजेब ने वहाँ पर भी अत्याचार करने शुरू कर दिये । हिन्दुओं के कुछ पंडित लोग गुरू तेग बहादुर जी से मिलने आनन्दपुर साहिब आये और विनती की कि उनके धर्म की रक्षा की जाये । गुरू तेग बहादुर जी भावुक हो उठे और वे पंडितों को दिलासा देकर औरंगजेब से बातचीत करने के लिए दिल्ली चल पड़े । रास्ते में ही गुरूजी को हिरासत में (औरंगजेब के सिपाहियों ने) ले लिया गया और एक लोहे के पिंजड़े में बन्द करके दिल्ली लाया गया ।

निश्चित दिन पर उन्हें चाँदनी चौक की कोतवाली से निकाला गया और भरी सभा में पूछा गया कि आप इस्लाम धर्म को कबूल कर लें । उन्हें तरह-तरह के लालच भी दिये गये लेकिन वे अपनी बात (इस्लाम धर्म स्वीकार न करने की) पर अडिग रहे । आखिरकार उनका शीश काट कर वहीं जीवन समाप्त कर दिया ।

गुरू तेग बहादुर को हिन्दू धर्म बचाने के लिए सम्मान से "हिन्दुओं की चादर" कहा जाता है । चांदनी चौक दिल्ली में एक बहुत सुन्दर गुरूद्वारा भी है जिसका नाम शीशगंज गुरूद्वारा है, वहां पर रोजाना श्रद्धालू लोग दर्शन करने जाते हैं ।

शिक्षा:

1. किसी लालच या दबाव में पड़कर हमें अपना दीन-ईमान नहीं खोना/बदलना चाहिए ।

2. हमेशा बहादुरी से अपने धर्म की रक्षा करनी चाहिये । जो लोग अपना धर्म बदल डालते हैं उनको सभी लोग धुतकारते हैं और उनको सारी उम्र इज्जत भी नहीं मिलती ।